International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 2; Issue 5; September 2017; Page No. 767-768

वेदों में पर्यावरण चिन्तन

सुनील दत्त
शोधच्छात्र, पी०एच०डी०, संस्कृत विभाग, जम्मू विश्वविद्यालय, जम्मू, जम्मू और कश्मीर, भारत।

प्रस्तावना

पर्यावरण सभी जीवों के लिए आधारभूत वस्तु है। पर्यावरण का अर्थ है – ''परितः आवरणम्'' अर्थात् –जिससे हम चारों और से ढँके हों। जैसे – पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश इन से हम ढके है। पर्यावरण शब्द – परि+आ+वृ+ल्युट् से बना है। अंग्रेजी के Environment शब्द के विन्यास से भी यह स्पष्ट होता है कि इस में 'Environ' का अर्थ है – घेरना (Encircle) है और 'Ment' का अर्थ है – चतुर्दिश अर्थात् चारों ओर से घेरना। वस्तुतः Environment शब्द Envelope शब्द का पर्याय है। जबकि पर्यावरण चिन्तन आज के समय का ज्वलन्त विषय है। औद्योगिक करण एवं तीव्र भौतिक विकास के परिणाम स्वरूप प्रकृति एवं मानव के मध्य उत्पन्न असन्तुलन के कारण वैश्विक पर्यावरण घातक रूप से प्रदूषित हो रहा है, जो मानव एवं मानवेतर प्राणियों के जीवन के लिये अनेक संकटों का कारण बनता जा रहा है। मानव को आज ऐसे मार्ग की आवश्यकता है, जिसमें चलकर वह प्रकृति का समुचित दोहन करते हुए पर्यावरण को प्रदूषित होने से बचाने के साथ–साथ भौतिक विकास के मार्ग में भी अग्रसर होता रहे।

''पर्यावरण'' विकास के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण आधार स्तम्भों में से एक है। सामाजिक–आर्थिक विकास और पर्यावरण संरक्षण परस्पर निर्भर प्रक्रियाएँ हैं। समय–समय पर आयोजित पर्यावरण से सम्बन्धित सम्मेलन और संगोष्ठियाँ मानव जाति का ध्यान पर्यावरण–क्षरण से उत्पन्न खतरों की ओर आकर्षित करते रहे हैं। आज विश्वभर में पर्यावरण में मानवीय हस्तक्षेप एक मुख्य मुद्दा हो गया है। मनुष्य ने अपनी निरन्तर वृद्धिशील अपेक्षाओं को पूरा करने हेतु विना सोचे–समझे विभिन्न प्राकृतिक घटकों के नाजुक सन्तुलन के साथ छेड़–छाड़ की है। विकास की अन्धी दौड़ में वह पर्यावरण प्रदूषण के दुष्प्रभावों को प्रायः विस्तृत ही कर चुका है। वैश्वीकरण के इस युग में एक देश के पर्यावरण में ह्रास अन्य देशों को भी प्रभावित करता हैं। अतः इस समस्या के समाधान पर एक विहंगम दृष्टि डालने की आवश्यकता है। इन सब के विषय में बहुत कुछ जानकारी एवं पर्यावरण विषयक सामग्री वैदिक साहित्य में उपलब्ध होती है। वैदिक ऋषि पर्यावरण के प्रति मानव को सचेत ही नहीं करता अपितु उसके संरक्षण के लिए प्रेरित भी करता है। इसके लिए उसने पर्यावरण से जुड़े सभी पदार्थों को देवत्य का पद प्रदान कर उसके प्रति न केवल आदरभाव प्रकट किया है अपितु पर्यावरण की सुरक्षा का सुनिश्चित आधार प्रदान करने के लिए उसे धार्मिक आस्था से जोड़कर निरन्तर संरक्षण और संवर्द्धन का मार्ग प्रशस्त किया है। पूरे सौर मण्डल में हमारी पृथ्वी एक मात्र ऐसा ग्रह है, जिसपर जीवन के योग्य पर्यावरण पाया जाता है। पृथ्वी के प्राकृतिक पर्यावरण के मुख्य घटक है – स्थलमण्डल, जलमण्डल, वायुमण्डल। आधुनिकता के इस युग में पर्यावरण चिन्तन ऐसे ही मार्ग के अन्वेषण का परिणाम है। 'मन्त्रद्रष्ट्रा' ऋषि भी केवल पर्यावरण के सभी पहलुओं पर सजग नहीं थे वरन् उसकी रक्षा एवं महत्त्व को भली–भाँति समझते थे। वैदिक ऋषि ने पृथिवीसूक्त में स्पष्ट रूप में पृथिवी को माता एवं स्वयं को उसका पुत्र कहा है – ''माता भूमि पुत्रोऽहं पृथिव्या''[1]

इसी कारण अथर्ववैदिक ऋषियों ने भूमि को ईश्वर का रूप बताते हुए पर्यावरण की रक्षा एवं पूजा का एक अविभाज्य अंग बताते हुए अथर्ववेद के 'दशम काण्ड' के इस मन्त्र से स्पष्ट होता है, ईश्वर को भूमि बताते हुए स्पष्ट किया –

यस्य भूमिः प्रमाऽन्तरिक्षमुतोदरम्।
दिवं यश्चक्रे मूर्धानं तस्यै ज्येष्ठाय ब्रह्मणे नमः।।[2]

अर्थात् भूमि जिसकी पाद स्थानीय और अन्तरिक्ष उदर के समान है तथा द्युलोक जिसका मस्तक है उन सब से बड़े ब्रह्म को नमस्कार है।

पर्यावरण प्रदूषण का भय एवं उसके संरक्षण की चिन्ता के परिणाम स्वरूप पर्यावरण विज्ञान का अस्तित्त्व भले ही इक्सीसवीं शताब्दी में अस्तित्त्व में आया हो, परन्तु हमारे मन्त्र द्रष्टा ऋषियों ने पर्यावरण के महत्त्व को हजारों वर्ष पहले पहचान लिया था। स्वच्छ, शान्त प्रकृति के क्रोड़ में अपना जीवन यापन करने वाले वैदिक ऋषियों के समक्ष यद्यपि आज की जैसी पर्यावरण समस्या नहीं थी, तथापि पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, नदियाँ, पशु–पक्षी, वृक्ष आदि प्राकृतिक उपादानों का स्तवन कर पर्यावरण के महत्त्व एवं प्रकृति तथा मानव के मध्य अपेक्षित अपरिहार्य सन्तुलन की आवश्यकता का विवेचन कर दिया था। गौतम ऋषि की यह प्रार्थना – संसार में वायु मधुर बहें, नदियाँ मधुर हों। रात मधुर हो, प्रभात मधुर हो, हमारा पिता द्यौ मधुर हो। वनस्पतियाँ मधुर हो। सूर्य मधुर हो और गाय मधुर हों। यह स्वच्छ पर्यावरण की ही कामना है।

ऋग्वेद[3] में एक पूरा सूक्त ही नदियों की स्तुति में है। अथर्ववेद में भी भूमि, जल, वायु, अग्नि, पर्जन्य आकाश आदि की जिन प्राकृतिक शक्तियों की उपासना की गई है, उसका पर्यावरण के साथ सम्बन्ध स्पष्टतः द्रष्टव्य है। बड़े–बड़े बाँधों, पक्की सड़कों, गगनचुम्बी भवनों के निर्माण एवं परमाणु परीक्षण आदि के कारण पृथिवी में होने वाले प्रदूषणों की हानियों से बचने की शिक्षा देता अथर्वा ऋषि का यह पृथ्वी स्तवन पर्यावरण विदों के लिए कितना प्रेरणादायक है –

यस्यां समुद्र उत सिन्धुरापो यस्यामन्नं कृष्टयः संबभूवुः।
यस्यामिदं जिन्वति प्राणदेजत् सानो भूमिः पूर्व पेये दधातु।।[4]

वैदिक काल पर्यावरण के लिए स्वर्णयुग था। वेद हमारे पथ–प्रदर्शक ही नहीं जबकि जीवन भाग्य–विधाता है, उनमें ऋषियों, मुनियों ने जिस प्रकार से पर्यावरण की व्याख्या की है वह प्रादेशिक स्तर पर, राष्ट्रिय स्तर पर तथा वैश्विक स्तर पर आज भी प्रासंगिक है।

ऋग्वेद[5] की ये ऋचायें इस तथ्य को स्पष्टतः उद्घाटित करती है कि हमारे मनीषी ऋषिमुनि–प्रकृति और पर्यावरण को कितना महत्त्व देते थे। वर्तमान में मानव कृत वनस्पति जगत् के विनाश से पारिस्थितिकी की असन्तुलन व भीषण पर्यावरण समस्याएँ उत्पन्न हुई है, जिसका समाधान वैदिक चिन्तन के परिपेक्ष में सम्भव है। ऋग्वेद के पुरुष सूक्त में परमपुरुष से इस सृष्टि के आविर्भाव का सम्यक् वर्णन मिलता है। अतः सकल सृष्टि पुरुषमय है। इस प्रकार जगत के उद्भव स्थिति प्रलय का हेतु यही सच्चिदानंद परम कारण ब्रह्म है –

यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते येन जातानि
जीवन्ति यत्प्रयन्ति अभि संविशन्ति च तज्जलानिति।।

आकाशीय वायु और अग्नि तत्त्व को शुद्ध करने के लिए इस धरती पर वनों एवं वृक्षों का महत्त्व सर्वाधिक है, क्योंकि वृक्ष ही कार्बन डाई आक्साईड को ग्रहण कर आक्सीजन उत्सर्जित करते है तथा पृथ्वी के ताप को कम करके ब्लेक होल के छिड़ को बढ़ने से रोकते हैं। जिससे पृथ्वी पर सूर्य के ताप की यात्रा का नियन्त्रण होता है। इन्हीं वैज्ञानिक पक्षों को स्वीकार कर वेद में वृक्षों का बन्दन किया गया है – नमो वृक्षेभ्यः।।[6]
पर्यावरण ही जीवन का आधार है। अतः उसका संरक्षण मानव का कर्त्तव्य है वेदों में वनस्पति को सर्वाधिक महत्त्व दिया है, क्योंकि यह विश्व को समृद्ध ही नहीं करती बल्कि प्राणदायक वायु के माध्यम से पर्यावरण को माधुर्यमय भी बनाती है। यथा –

मधुमानो वनस्पतिः।।[7]
सुमित्रियाः न आप ओषधयः सन्तु।।[8]

अभिप्राय यह है कि वेदों की रचना यद्यपि विविध देवी देवताओं एवं प्राकृतिक शक्तियों की स्तुति करने के लिए हुई है, किन्तु इन मन्त्रों में पर्यावरण संरक्षण के लिए सूत्र रूप में जो विचाराङ्कुर निहित है उनके पल्लवन संवर्धन द्वारा पर्यावरण चेतना के भावों को भी संयोजित उपबृंहित किया गया है।

सन्दर्भ

1. माता भूमि पुत्रोऽहं पृथिव्याः। अथर्व० 12/1/12
2. अथर्व० 10/7/32
3. ऋग्वेद सूक्त 10/75
4. अथर्व० 12/1/3
5. ऋग्वेद पुरुष सूक्त 10/90
6. यजुर्वेद 16/17
7. ऋग्वेद 10/146/6
8. यजुर्वेद 36/23